International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No.6 July-Aug 2024

मुगलकालीन भारत में कला और स्थापत्य के अवदान का अध्ययन

अजय यादव
नेट, एम.फिल., पीएच. डी. सबमिटेड, सहायक प्राध्यापक, (इतिहास विभाग)
एस.एस. मेमोरियल पी.जी. कॉलेज, ताखा, इटावा (यू.पी)
Corresponding Author- अजय यादव
DOI- 10.5281/zenodo.13950944

सारांश:

मुगलकालीन भारत में कला और स्थापत्य भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विकास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इस युग में कला और स्थापत्य में जो नवाचार और भव्यता देखने को मिलती है, वह न केवल तत्कालीन समाज की सौंदर्य दृष्टि का प्रमाण है, बल्कि आज भी उसकी पहचान बनी हुई है। मुगल सम्राटों ने भारतीय और इस्लामी शैलियों को मिलाकर एक अनूठी स्थापत्य शैली विकसित की, जिसे आज हम 'मुगल शैली' के नाम से जानते हैं। मुगलकालीन कला का उद्भव बाबर के समय से ही देखा जा सकता है। बाबर ने अपने शासनकाल में फारसी, मध्य एशियाई और भारतीय कलाओं का संगम किया। हुमायूं के शासनकाल के दौरान फारसी कलाकार मीर सैय्यद अली और अब्दुस समद को भारत बुलाया गया, जिन्होंने मुगल चित्रकला की नींव रखी। हुमायूँ के बाद अकबर ने इस कला को प्रोत्साहन दिया तथा आगामी मुगल शासकों ने चित्रकला, संगीत, नृत्य, साहित्य और वास्तुकला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिये।

मुख्य शब्दावली : मुगलकालीन भारत, कला और स्थापत्य के अवदान, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विकास, समाज की सौंदर्य दृष्टि, मुगल चित्रकला

प्रस्तावना:

मुगलकालीन भारत में कला और स्थापत्य का योगदान भारतीय संस्कृति और इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मुगल साम्राज्य की स्थापना 16वीं शताब्दी में बाबर ने की, जो तुर्क-मंगोल वंश से था। उसके बाद के शासकों, जैसे अकबर, जहांगीर, शाहजहां, और औरंगजेब, ने कला, स्थापत्य, और संस्कृति को बढ़ावा दिया, जिससे भारतीय स्थापत्य का एक नया स्वरूप विकसित हुआ। मुगलकालीन स्थापत्य कला में इस्लामी, फारसी, तुर्की और भारतीय स्थापत्य शैलियों का समन्वय देखा जा सकता है, जो इस युग की विशेषता है। मुगलकालीन स्थापत्य कला अपने अद्वितीय स्थापत्य शैली और विशाल संरचनाओं के लिए प्रसिद्ध है। इनकी स्थापत्य शैली में लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर का व्यापक उपयोग हुआ। मुगल सम्राटों ने कई मस्जिदें, किले, महल, मकबरे, और उद्यानों का निर्माण किया, जो आज भी भारतीय उपमहाद्वीप के स्थापत्य कला की धरोहर के रूप में जाने जाते हैं।अकबर के शासनकाल में मुगल स्थापत्य कला ने अपनी नींव मजबूत की। अकबर का मानना था कि भारत में सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता को अपनाना और उसका समावेशन जरूरी है, इसलिए उसके निर्माण कार्यों में हिंदू और इस्लामी स्थापत्य का अद्भुत संयोजन देखने को मिलता है। अकबर के शासनकाल के दौरान फ़तेहपुर सीकरी का निर्माण एक प्रमुख उदाहरण है। यह नगर अकबर द्वारा 1571 में बसाया गया और इसे राजधानी के रूप में स्थापित किया गया था। यहां का बुलंद दरवाजा, जो इस्लामी स्थापत्य का उत्कृष्ट नमूना है, अकबर की विजय का प्रतीक माना जाता है। इसके अतिरिक्त, जामा मस्जिद, दीवान-ए-खास, और दीवान-ए-आम जैसी इमारतें अकबर के समय की स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

मुगलकालीन उद्यान

मुगलकालीन उद्यान भारतीय स्थापत्य कला और परंपराओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो उस समय के मुगल सम्राटों की सौंदर्य और प्रकृति प्रेमी दृष्टि का प्रतीक हैं। मुगल सम्राटों ने अपने उद्यानों के निर्माण में फारसी, इस्लामी, और भारतीय शैलियों का संयोजन किया, जो उस युग की वास्तुकला और बागवानी की अद्वितीय दृष्टि को दर्शाते हैं। इन उद्यानों का मुख्य उद्देश्य केवल सौंदर्यशास्त्र को संतुष्ट करना ही नहीं था, बल्कि धार्मिक, आध्यात्मिक और जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रतीकात्मक महत्व को भी ध्यान में रखना था। मुगल उद्यानों में प्रायः समरूपता, जल संरचनाएं, और हरे-भरे पौधों का समावेश देखा जाता है, जो इन्हें न केवल स्थापत्य दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाते हैं, बल्कि प्राकृतिक सौंदर्य के अनुपम उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं।

➢ **चहारबाग (चार-बाग) की अवधारणा**

मुगल उद्यानों की सबसे प्रमुख विशेषता उनकी चहारबाग (चार-बाग) संरचना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है चार भागों में विभाजित उद्यान। यह अवधारणा फारसी संस्कृति से आई थी और इसे मुगलों ने भारत में बड़े पैमाने पर अपनाया। चहारबाग उद्यानों की डिजाइन आमतौर पर चार बराबर भागों में विभाजित होती थी, जिनमें जल धाराएं, फव्वारे, और छोटे तालाब होते थे। इन उद्यानों को इस्लामी स्वर्ग के रूपक के रूप में देखा जाता था, जहां चार नदियों का उल्लेख होता है। यह जल संरचनाएं उद्यान को न केवल ठंडक प्रदान करती थीं, बल्कि इन्हें आध्यात्मिक और धार्मिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण माना जाता था।

चहारबाग का डिजाइन मुख्यतः चार हिस्सों में विभाजित होता है, जिनके बीच में एक जलाशय या फव्वारा होता है। इन चार हिस्सों को आपस में छोटी-छोटी जलधाराओं से जोड़ा जाता है, जो स्वर्ग की चार नदियों के प्रतीक होते हैं। इन जलधाराओं के किनारे पर पेड़-पौधे और फूलों की क्यारियाँ बनाई जाती हैं, जिससे उद्यान में प्राकृतिक सौंदर्य और ठंडक बनी रहती है। पानी की धारा मुगलों के उद्यानों का एक प्रमुख तत्व था, क्योंकि इसे जीवन, शांति और पवित्रता का प्रतीक माना जाता था।

➢ **मुगलकालीन उद्यानों का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व**

मुगल उद्यानों का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व अत्यधिक था। मुगलों का मानना था कि उद्यान न केवल धरती पर स्वर्ग का प्रतीक होते हैं, बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिबिंब भी होते हैं। उद्यानों की समरूपता और जल संरचनाओं का संतुलन इस बात का प्रतीक था कि जीवन और मृत्यु, पाप और पुण्य, और आत्मा और शरीर के बीच एक आदर्श संतुलन होना चाहिए। इस प्रकार, मुगल उद्यानों को सिर्फ वास्तुकला का एक सुंदर नमूना ही नहीं, बल्कि धार्मिक और दार्शनिक प्रतीकात्मकता का भी केंद्र माना जाता था।

मुगल उद्यानों में पेड़-पौधों और फूलों का चयन भी धार्मिक प्रतीकों से प्रभावित था। आमतौर पर, उद्यानों में साइप्रस, फलदार पेड़ जैसे अनार और नींबू के पेड़, और गुलाब के फूल लगाए जाते थे। साइप्रस का पेड़ अनन्त जीवन का प्रतीक था, जबकि फलदार पेड़ और फूल जीवन की प्रसन्नता और सौंदर्य को दर्शाते थे। इस प्रकार, मुगल उद्यानों को स्वर्ग की अवधारणा से जोड़कर देखा जाता था, जहां प्रकृति की सुंदरता और शांति का अनुभव किया जा सकता था।

➢ **फतेहपुर सीकरी और अकबर के उद्यान**

अकबर के शासनकाल में मुगल उद्यानों का विकास प्रारंभ हुआ। अकबर ने फतेहपुर सीकरी को अपनी राजधानी बनाया और यहां एक विशाल उद्यान की स्थापना की। फतेहपुर सीकरी में स्थित उद्यान उस समय की शाही शक्ति और धार्मिक महत्व का प्रतीक था। यहां का चहारबाग शैली का उद्यान अकबर के वास्तुशिल्प दृष्टिकोण को दर्शाता है, जिसमें फारसी और भारतीय शैलियों का समावेश देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, अकबर ने आगरा और लाहौर में भी कई उद्यानों का निर्माण करवाया, जो उनके समय की स्थापत्य कला और प्राकृतिक सौंदर्य के प्रतीक थे।

➢ **जहांगीर और कश्मीर के उद्यान**

जहांगीर के शासनकाल में मुगल उद्यानों का सबसे अधिक विकास हुआ। जहांगीर को प्रकृति से गहरा लगाव था और उन्हें विशेष रूप से कश्मीर के उद्यानों का शौक था। जहांगीर और उनकी पत्नी नूरजहां ने कश्मीर में कई सुंदर उद्यानों का निर्माण करवाया, जिनमें से शालीमार बाग और निशात बाग सबसे प्रमुख हैं। शालीमार बाग जहांगीर का सबसे प्रिय उद्यान था, और इसका निर्माण 1619 में कश्मीर की खूबसूरत वादियों में किया गया था। यह उद्यान झील के किनारे स्थित है और इसमें चहारबाग शैली का उपयोग किया गया है। इसमें झरने, फव्वारे, और सुंदर फूलों के पौधे उद्यान को एक स्वर्गीय अनुभव प्रदान करते हैं।

कश्मीर के उद्यानों की खासियत यह थी कि वे पहाड़ियों की ढलानों पर बने होते थे, जिससे पानी का प्रवाह स्वाभाविक रूप से होता था। यहां की जल संरचनाओं का डिज़ाइन इस प्रकार से किया गया था कि पानी विभिन्न स्तरों पर बहता रहता था, जो उद्यान को न केवल सौंदर्य प्रदान करता था, बल्कि इसे ठंडा और आरामदायक भी बनाता था। जहांगीर और नूरजहां के समय के ये उद्यान आज भी कश्मीर की पहचान हैं और मुगल स्थापत्य कला के अनमोल धरोहर हैं।

➢ **शाहजहां और दिल्ली के उद्यान**

शाहजहां के शासनकाल में मुगल स्थापत्य कला ने अपने चरम पर पहुंची, और इसके साथ ही मुगल उद्यानों का भी अत्यधिक विकास हुआ। शाहजहां ने दिल्ली और आगरा में कई महत्वपूर्ण उद्यानों का निर्माण करवाया, जिनमें शालीमार बाग (दिल्ली) और महताब बाग (आगरा) प्रमुख हैं। दिल्ली का शालीमार बाग मुगलों के समय का एक महत्वपूर्ण उद्यान है, जहां शाहजहां अपने दरबारियों के साथ समय बिताया करते थे। इस उद्यान का डिज़ाइन भी चहारबाग शैली में किया गया था, जिसमें फव्वारे, जलधाराएं, और हरे-भरे पौधे शामिल थे।

महताब बाग आगरा में यमुना नदी के किनारे स्थित है और इसका निर्माण ताजमहल के ठीक सामने किया गया था। इसे "चांदनी बाग" के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि इसे इस प्रकार से डिज़ाइन किया गया था कि रात में ताजमहल की छवि इस उद्यान के पानी में दिखाई देती थी। महताब बाग का निर्माण शाहजहां की वास्तुकला की उच्चतम शैली और उनकी सौंदर्य दृष्टि का प्रमाण है।

➢ **मुगल उद्यानों का सामाजिक और राजनीतिक महत्व**

मुगल उद्यानों का न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व था, बल्कि उनका सामाजिक और राजनीतिक महत्व भी था। मुगलों ने उद्यानों का उपयोग शाही शक्ति और वैभव को प्रदर्शित करने के लिए किया। इन उद्यानों में शाही दावतें, दरबार, और महत्वपूर्ण राजनीतिक चर्चाएं होती थीं। शाही महलों के निकट स्थित ये उद्यान मुगल सम्राटों की शक्ति और समृद्धि का प्रतीक थे, जहां दरबारियों और अतिथियों का स्वागत किया जाता था।

मुगलकालीन उद्यानों का निर्माण केवल शाही परिवार के लिए ही नहीं था, बल्कि आम जनता के लिए भी खुला रहता था। इन उद्यानों का उद्देश्य था कि लोग शांति और सुकून का अनुभव कर सकें और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद उठा सकें। इस प्रकार, मुगल उद्यानों ने सामाजिक समरसता और धार्मिक सहिष्णुता को भी बढ़ावा दिया, जहां सभी वर्गों के लोग एक साथ आ सकते थे।

शिल्पकला और हस्तकला

मुगलकालीन शिल्पकला और हस्तकलाभारतीय उपमहाद्वीप की कला और सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसने भारतीय संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है। मुगल साम्राज्य का भारत में आगमन 16वीं शताब्दी में हुआ, और इसके साथ ही देश में नई कला शैलियों, तकनीकों, और स्थापत्य परंपराओं का उदय हुआ। मुगल शासकों ने भारत की पारंपरिक शिल्पकला और हस्तकला को न केवल संरक्षण दिया, बल्कि इसमें फारसी, मध्य एशियाई और इस्लामी शैलियों का भी समावेश किया। इस संगम ने भारतीय कला और शिल्पकला को एक नई दिशा दी और इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाई।मुगलकालीन शिल्पकला और हस्तकला में भी उच्च गुणवत्ता और निपुणता देखने को मिलती है। मुगल काल में बुनाई, कढ़ाई, आभूषण निर्माण, धातु कार्य, और संगमरमर पर नक्काशी जैसी कलाओं का विशेष महत्व था। इस काल में 'पार्चिनकारी' नामक एक शिल्पकला का विकास हुआ, जिसमें संगमरमर पर बहुमूल्य पत्थरों की नक्काशी की जाती थी। यह कला ताजमहल और अन्य मुगल स्मारकों में बखूबी देखी जा सकती है। इसके अलावा, कालीन निर्माण और वस्त्र शिल्प में भी मुगलों का योगदान महत्वपूर्ण था। इस समय के वस्त्रों में कढ़ाई और जरी का काम बहुत प्रसिद्ध था, जिसका उपयोग शाही परिधानों में किया जाता था।

➢ **मुगलकालीन शिल्पकला का स्वरूप**

मुगल शिल्पकला में मुख्य रूप से वास्तुकला, चित्रकला, वस्त्रकला, आभूषण निर्माण, धातु शिल्प और हस्तलिखित पुस्तकें (मिनिएचर पेंटिंग्स) शामिल थीं। मुगल शासक कला और शिल्प के बड़े संरक्षक थे, और उन्होंने अपने शासनकाल के दौरान कई कारीगरों और शिल्पियों को संरक्षण दिया। इससे शिल्पकला का व्यापक विकास हुआ और इसका प्रभाव भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं में देखा जा सकता है।

➢ **वास्तुकला और शिल्पकला**

मुगलकालीन शिल्पकला का सबसे प्रमुख उदाहरण उनकी वास्तुकला में देखा जा सकता है। मुगल सम्राटों ने कई भव्य महलों, मकबरों, किलों और मस्जिदों का निर्माण करवाया, जो आज भी भारतीय स्थापत्य कला के अद्वितीय उदाहरण माने जाते हैं। ताजमहल, लाल किला, फतेहपुर सीकरी, जामा मस्जिद, और हुमायूं का मकबरा कुछ प्रमुख मुगल स्थापत्य कृतियां हैं। इन इमारतों में बारीक नक्काशी, संगमरमर पर की गई जड़ाई (पिएत्रा ड्यूरा), और इस्लामी कला के कई रूप देखने को मिलते हैं।

पिएत्रा ड्यूराएक प्रकार की जड़ाई की कला थी, जिसमें संगमरमर की सतह पर अर्ध-कीमती पत्थरों का उपयोग करके खूबसूरत चित्र या डिज़ाइन बनाए जाते थे। ताजमहल इस कला का सबसे सुंदर उदाहरण है, जहां सफेद संगमरमर पर बहुमूल्य पत्थरों की जड़ाई की गई है। मुगल शासक संगमरमर के शिल्पकला के प्रेमी थे, और उन्होंने इसका बड़े पैमाने पर उपयोग किया। मुगलकालीन इमारतों की नक्काशी और जड़ाई कला ने भारतीय शिल्प को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाया।

➢ **चित्रकला**

मुगलकालीन शिल्पकला में चित्रकला का भी महत्वपूर्ण स्थान है। मुगलों के समय की चित्रकला में फारसी और भारतीय शैलियों का मिश्रण देखने को मिलता है। मुगल मिनिएचर पेंटिंग्स में जटिल और विस्तृत चित्रण किया जाता था, जिसमें रंगों और डिजाइन की सूक्ष्मता प्रमुख होती थी। इस कला का विकास अकबर के शासनकाल में हुआ और जहांगीर के समय में इसे विशेष रूप से प्रोत्साहन मिला।

मुगल चित्रकला में राजसी जीवन, दरबारी दृश्य, शिकार, युद्ध, प्रेम प्रसंग, और प्रकृति के विभिन्न रूपों को दर्शाया जाता था। इन चित्रों में सम्राटों की जीवनशैली, उनकी दरबार की गतिविधियों और उनकी युद्धकला के दृश्यों का विस्तार से चित्रण किया जाता था। रंगों का उपयोग बहुत ही सूक्ष्मता और सजीवता से किया जाता था, जिससे चित्र जीवंत प्रतीत होते थे। मुगलकालीन चित्रकला का प्रभाव बाद में कई भारतीय राजवंशों की कला में भी देखा गया।

➢ **मुगलकालीन हस्तकला का विकास**

मुगलकालीन हस्तकला ने भारत के विभिन्न शिल्प उद्योगों को प्रोत्साहित किया और उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। मुगलों के शासनकाल में कई प्रकार की हस्तकला का विकास हुआ, जिनमें वस्त्र निर्माण, आभूषण शिल्प, कालीन बुनाई, धातु शिल्प, और मिट्टी के बर्तन शामिल थे।

➢ **वस्त्र निर्माण और बुनाई**

मुगलकालीन वस्त्र कला में विशेष रूप से रेशम और जरी के वस्त्र प्रमुख थे। मुगल सम्राट और उनकी रानियां रेशमी और कढ़ाई किए हुए वस्त्र पहनते थे, जिन पर सुनहरी और चांदी की जरी का काम किया जाता था। इस समय के कारीगरों ने बुनाई कला में निपुणता प्राप्त की थी, और ब्रोकेड, बनारसी साड़ी, और पश्मीना शॉल जैसे वस्त्रों का निर्माण किया। बनारस और कश्मीर मुगलकालीन वस्त्र निर्माण के प्रमुख केंद्र थे, जहां आज भी इस कला की परंपरा जीवित है।

कालीन बुनाई का भी मुगलकाल में विशेष महत्व था। फारसी शिल्पकारों और कलाकारों के प्रभाव से भारत में कालीन बुनाई का विकास हुआ। इन कालीनों पर जटिल डिज़ाइन और सुंदर रंग संयोजन किए जाते थे, जो महलों और दरबारों की शोभा बढ़ाते थे। कालीनों में ज्यामितीय डिज़ाइन, फूलों की बेलें, और पशु चित्रण जैसे विषय प्रमुख होते थे।

➢ **आभूषण शिल्प**

मुगलकालीन आभूषण शिल्प अत्यंत समृद्ध और भव्य था। इस काल में आभूषणों का निर्माण सोने, चांदी, और बहुमूल्य पत्थरों से किया जाता था। मुगलों के समय की आभूषण कला में न केवल फारसी और भारतीय शैलियों का मिश्रण था, बल्कि इसमें इस्लामी डिज़ाइन और आकृतियों का भी प्रभाव देखा जा सकता है। मुगल सम्राट और उनकी रानियां जटिल डिजाइन वाले आभूषण पहनते थे, जिनमें कुंदन, मीनाकारी, और जड़ाऊ काम का विशेष स्थान था।

कुंदन और मीनाकारी शिल्प राजस्थान और गुजरात में प्रमुख रूप से विकसित हुए, जहां सोने के आभूषणों पर जड़ाई की जाती थी और उन्हें बहुमूल्य रत्नों से सजाया जाता था। मीनाकारी में धातु पर रंगीन तामचीनी का काम किया जाता था, जो आभूषणों को विशेष चमक और सुंदरता प्रदान करता था। मुगलकालीन आभूषण शिल्प का प्रभाव आज भी भारतीय आभूषण निर्माण उद्योग में देखा जा सकता है।

➢ **धातु शिल्प**

मुगलकालीन धातु शिल्प में तांबा, पीतल, और कांसे का प्रमुख रूप से उपयोग किया जाता था। इन धातुओं से कारीगर विभिन्न प्रकार के बर्तन, औजार, मूर्तियां, और सजावटी सामान बनाते थे। धातु शिल्प में नक्काशी, चित्रांकन, और डिजाइनिंग का काम बड़े पैमाने पर किया जाता था। पीतल और तांबे के बर्तनों पर जटिल नक्काशी और डिजाइन बनाई जाती थी, जो मुगलकालीन दरबारों और महलों की शोभा बढ़ाते थे।

➢ **लघु चित्रकारी (मिनिएचर पेंटिंग्स)**

मुगलकालीन शिल्पकला में हस्तलिखित पुस्तकों का भी विशेष महत्व था। मुगलों ने कई धार्मिक ग्रंथों और साहित्यिक कृतियों को लघु चित्रों के साथ सजाया। इन लघु चित्रों में मुख्यतः दरबारी जीवन, धार्मिक प्रसंग, और ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण किया जाता था। अकबर के शासनकाल में 'अकबरनामा' और 'तुजुक-ए-जहांगीरी' जैसी महत्वपूर्ण पुस्तकों को लघु चित्रों के साथ प्रकाशित किया गया।

धार्मिक स्थापत्य कला

मुगलकालीन भारत में धार्मिक स्थापत्य एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर है, जिसने भारतीय वास्तुकला को न केवल एक नई दिशा दी, बल्कि भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक विविधता को भी अभिव्यक्त किया। मुगल साम्राज्य (1526-1857) के दौरान भारत में धार्मिक स्थापत्य कला का अभूतपूर्व विकास हुआ, जिसमें इस्लामी, फारसी, मध्य एशियाई और भारतीय वास्तुकला शैलियों का मिश्रण देखने को मिलता है। मुगल शासकों ने अपने साम्राज्य में मस्जिदों, मकबरों, मदरसों, और अन्य धार्मिक स्थलों का निर्माण किया, जो इस्लामी धर्म और मुगल संस्कृति के प्रतीक बन गए। इन इमारतों ने भारतीय स्थापत्य कला पर स्थायी प्रभाव छोड़ा। मुगलकालीन भारत में धार्मिक स्थापत्य कला का भी विशेष योगदान रहा है। इस काल में कई भव्य मस्जिदों का निर्माण हुआ, जिनमें जामा मस्जिद (दिल्ली), मोती मस्जिद (आगरा), और बादशाही मस्जिद (लाहौर) शामिल हैं। इन मस्जिदों की भव्यता और नक्काशी मुगल स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। मस्जिदों के निर्माण में विस्तृत आंगन, ऊंची मीनारें, और सुंदर गुंबदों का उपयोग किया जाता था, जो मुगल स्थापत्य की प्रमुख विशेषता थी। इसके अलावा, इस काल में हिंदू-मुस्लिम समन्वय को भी देखा जा सकता है, जहां कई हिंदू मंदिरों और मस्जिदों के निर्माण में स्थापत्य शैलियों का मिश्रण हुआ।

➢ **मुगलकालीन स्थापत्य कला का उदय**

मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर (1526-1530) से लेकर औरंगजेब (1658-1707) तक, लगभग सभी मुगल शासकों ने अपने शासनकाल में विभिन्न धार्मिक इमारतों का निर्माण करवाया। बाबर ने भारत में प्रवेश करने के बाद इस्लामी स्थापत्य परंपराओं को स्थापित करने की शुरुआत की, लेकिन इसका असली विकास अकबर (1556-1605), जहांगीर (1605-1627), शाहजहां (1628-1658), और औरंगजेब के शासनकाल में हुआ।

मुगल स्थापत्य कला में सबसे महत्वपूर्ण योगदान अकबर का माना जाता है, जिन्होंने भारतीय शिल्पकारों और वास्तुकारों को अपने कार्यों में सम्मिलित किया और एक नई वास्तुकला शैली का विकास किया, जिसे 'इंडो-इस्लामिक वास्तुकला' कहा जाता है। इसमें इस्लामी

स्थापत्य की पारंपरिक विशेषताओं के साथ भारतीय स्थापत्य शैली का भी मिश्रण किया गया।

➢ **धार्मिक स्थापत्य की प्रमुख विशेषताएँ**

मुगलकालीन धार्मिक स्थापत्य कला में विशेष रूप से मस्जिदों और मकबरों का निर्माण प्रमुख था। इन इमारतों में इस्लामी धार्मिक विश्वासों और वास्तुकला की विशेषताएं स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। मुगल मस्जिदों और मकबरों में गुंबद, मीनारें, मेहराब, जालीदार खिड़कियाँ, और विशाल प्रवेशद्वार प्रमुख होते थे। इसके साथ ही, मुगलों ने लाल बलुआ पत्थर, संगमरमर, और अर्ध-कीमती पत्थरों का व्यापक उपयोग किया, जो उनके स्थापत्य कला को अनोखी पहचान देते थे।

1. गुंबद और मीनारें:

मुगलकालीन धार्मिक इमारतों में गुंबद और मीनारें प्रमुखता से देखी जाती हैं। गुंबद, मुगल वास्तुकला का केंद्रीय तत्व था, जो फारसी और तुर्की स्थापत्य कला से प्रेरित था। मुगलों ने गुंबदों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया, खासकर मकबरों और मस्जिदों में। इसके उदाहरण के रूप में ताजमहल का विशाल गुंबद है, जो मुगलकालीन स्थापत्य कला की उत्कृष्टता को दर्शाता है। मीनारें मस्जिदों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थीं, जिनका उपयोग अजान (प्रार्थना के लिए बुलावा) देने के लिए किया जाता था।

2. जाली और नक्काशी:

मुगलकालीन धार्मिक स्थापत्य कला में जालीदार खिड़कियों और नक्काशीदार दरवाजों का व्यापक उपयोग किया गया। इन जालीदार खिड़कियों से हवा और रोशनी का प्रवेश होता था, जिससे इमारतों में एक विशेष प्रकार की शीतलता बनी रहती थी। जाली में ज्यामितीय और पुष्प डिजाइन होते थे, जो इस्लामी कला की विशिष्टता थी। ताजमहल और हुमायूं के मकबरे में जाली के सुंदर उदाहरण देखे जा सकते हैं।

3. संगमरमर और जड़ाई का काम (पिएत्रा ड्यूरा):

संगमरमर और जड़ाई का काम मुगलकालीन धार्मिक स्थापत्य की एक और महत्वपूर्ण विशेषता थी। शाहजहां के शासनकाल में इस कला का सर्वाधिक विकास हुआ। ताजमहल में सफेद संगमरमर पर बहुमूल्य पत्थरों की जड़ाई (पिएत्रा ड्यूरा) की गई, जिसमें फूलों, बेलों, और अन्य सजावटी आकृतियों को दर्शाया गया। यह कला फारसी और मध्य एशियाई शैलियों से प्रभावित थी, लेकिन मुगलों ने इसे नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया।

4. बागों का उपयोग:

मुगलकालीन धार्मिक स्थापत्य में बागों का भी विशेष महत्व था। चारबाग शैली, जिसमें बाग चार भागों में विभाजित होते थे, मुगलों की प्रमुख स्थापत्य योजनाओं में से एक थी। यह शैली इस्लामी धार्मिक विश्वासों से जुड़ी थी, जिसमें जन्नत (स्वर्ग) के चार नदियों वाले बाग की अवधारणा थी। ताजमहल के चारबाग और हुमायूं के मकबरे के बाग इस शैली के प्रमुख उदाहरण हैं।

➢ **मुगलकालीन धार्मिक स्थापत्य कला का प्रभाव**

मुगलकालीन धार्मिक स्थापत्य कला का प्रभाव न केवल उस समय के भारत पर पड़ा, बल्कि आने वाले युगों में भी इसे भारतीय वास्तुकला में देखा गया। मुगलों द्वारा विकसित वास्तुशैली ने अन्य भारतीय राजवंशों को भी प्रेरित किया, जिनमें राजपूत, मराठा, और सिख वास्तुकला शैलियों में मुगल स्थापत्य के तत्व स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। मुगलों ने भारतीय स्थापत्य को एक नई दिशा दी, जिसमें इस्लामी स्थापत्य के साथ भारतीय परंपराओं का सुंदर समन्वय हुआ।धार्मिक स्थापत्य कला के क्षेत्र में मुगलकाल का योगदान अविस्मरणीय है। यह कला न केवल वास्तुकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह उस समय की धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक धरोहर को भी संजोए हुए है। मुगलकालीन धार्मिक स्थापत्य कला आज भी भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा है और भारत की सांस्कृतिक विविधता को अभिव्यक्त करती है।

निष्कर्ष

मुगलकालीन भारत में कला और स्थापत्य का योगदान भारतीय संस्कृति और इतिहास का एक अमूल्य हिस्सा है। मुगल सम्राटों ने स्थापत्य, चित्रकला, शिल्पकला, और धार्मिक स्थापत्य में अपने योगदान से भारत को एक नई दिशा दी। उनकी स्थापत्य शैली ने न केवल उस समय के समाज पर गहरा प्रभाव डाला, बल्कि आने वाले समय के वास्तुशिल्प परंपराओं को भी प्रभावित किया। मुगलकालीन स्थापत्य का सौंदर्य और भव्यता आज भी भारतीय उपमहाद्वीप की पहचान है, जो इस युग की महानता को दर्शाते हैं।

संदर्भ ग्रंथसूची

1. कोच, एब्बा. मुगल वास्तुकला: इसके इतिहास और विकास की रूपरेखा (1526-1858)। प्रेस्टेल प्रकाशन, 1991।
2. नाथ, आर. मुगल वास्तुकला का इतिहास। अभिनव प्रकाशन, 1982।
3. आशेर, कैथरीन बी. मुगल भारत की वास्तुकला। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1992।
4. गैस्कोइग्ने, बम्बर। महान मुगल. हार्पर एंड रो, 1971.
5. बेगली, वेन ई.,और जेड.ए. देसाई. ताज महल: प्रबुद्ध मकबरा - सत्रहवीं सदी के मुगल और यूरोपीय वृत्तचित्र स्रोतों का एक संकलन। वाशिंगटन विश्वविद्यालय प्रेस, 1989।
6. टिलोट्सन, जी.एच.आर. मुग़ल भारत. पेंगुइन बुक्स, 1990।

7. मिशेल, जॉर्ज, और मार्क ज़ेब्रॉस्की। दक्कन सल्तनत की वास्तुकला और कला। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999।
8. शर्मा, आर.सी. मुगल कला और वास्तुकला। भारतीय कला प्रकाशन, 2001.
9. शिमेल, एनेमेरी। महान मुगलों का साम्राज्य: इतिहास, कला और संस्कृति। रिएक्शन बुक्स, 2004.
10. ब्राउन, पर्सी. भारतीय वास्तुकला: इस्लामी काल. डी. बी. तारापोरवाला संस, 1942।
11. रिचर्ड्स, जॉन एफ. मुगल साम्राज्य। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993।
12. रिज़वी, सैय्यद अतहर अब्बास। अकबर के शासनकाल में मुसलमानों का धार्मिक और बौद्धिक इतिहास: अबुल फज़ल (1556-1605) के विशेष संदर्भ में। मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्रा. लिमिटेड, 1975.
13. चंद्रा, सतीश. मध्यकालीन भारत: सल्तनत से मुगलों तक भाग - II (मुगल साम्राज्य: 1526-1748)। हर-आनंद प्रकाशन, 1999।
14. आनंद, मुल्क राज. भारत में इस्लामी वास्तुकला. मार्ग प्रकाशन, 1992।
15. ब्लेक, स्टीफन पी. शाहजहानाबाद: मुगल भारत में संप्रभु शहर, 1639-1739। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991।